डॉ. राघव चौहान : फेम बीहाइंड पेन | Dr. Raghav Chauhan : Fame Behind Pain

कहते हैं कि जिद्दी व्यक्ति या तो इतिहास बदलता है या इतिहास रचता है। वैसी ही एक कहानी राघव चौहान के व्यक्तित्व से मिलती है।

राघव चौहान का जन्म 06 July 1997 को उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले की तहसील ठाकुरद्वारा के ग्राम टांडा अफजल के एक साधारण परिवार में हुआ था। उनका अतीत काफ़ी संघर्षित रहा है।

उनका पालन-पोषण उनके माता-पिता के द्वारा हुआ, परंतु उनके बचपन में उनकी एक दीदी और मौसी का अहम योगदान रहा है।

बचपन से ही राघव पढ़ाई के प्रति रूचिकर और जिज्ञासु प्रवृत्ति के रहे हैं। वे 8वीं तक क्लास में ही नहीं, बल्कि पूरे स्कूल में अव्वल आते थे। उसके बाद भी उनकी पढ़ाई का स्तर प्रथम श्रेणी का रहा है।

उनके पिता सत्यपाल सिँह अंग्रेजी विषय के अध्यापक थे। परिवार की स्थिति पहले से ही दयनीय रही है। परंतु उनके माता-पिता को राघव के रूप में आशा की एक किरण दिखाई दी। उनको लगता था कि उनका बेटा ही उनके परिवार को इस दलदल से बाहर निकालेगा।

परिवार का खर्च स्कूल के पैसों में चलता था। कुछ अतिरिक्त पैसों के लिए उनके पिता बच्चों को ट्यूशन पढ़ाते थे।

राघव भी पूरी लगन से पढ़ाई करते थे और पढ़ाई में अच्छे नम्बर प्राप्त करते थे, जिससे उनके पिता को उन पर गर्व होता था। परंतु घर की हालत देखकर उनका जुनून और बढ़ जाता था। इस प्रकार से उनकी जीवन-यात्रा की शुरूआत हुई।

राघव के जीवन की एक ओर विशिष्टता है। वे **धार्मिक प्रवृत्ति** के हैं पवित्र ग्रन्थों को पढ़ना, उनके बारे में विस्तृत एवं गूढ़ रहस्यों को जानना उनका एक प्रिय विषय था।

12 वर्ष की अवस्था में ही उन्होनें अपने जीवन में **वेद, पुराण, रामायण और श्रीमदभगवद्गीता** जैसी पवित्र पुस्तकों का भी अध्ययन किया। ईश्वर के सत्य वचन और ईश्वर के प्रति आस्था उनके जीवन को एक सामान्य व्यक्ति से भिन्न बनाती है।

आपको बताना चाहेंगे कि राघव चौहान ने **सन् 2008 में आयोजित जनपद स्तरीय और प्रांतीय स्तरीय " प्रश्नमंच प्रतियोगिता " में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया।** आज भी उनकी सम्मान समारोह की एक तस्वीर सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज, हस्तिनापुर में लगी है। इस प्रकार **पहली ट्रॉफ़ी राघव को हस्तिनापुर से मिली।**

राघव के जीवन में बहुत घटनाएं ऐसी घटित हुई हैं जब उन्हें विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, परंतु वे किसी भी परिस्थिति से डगमगाये नहीं और अपने पथ पर निरंतर चलते रहे।

एक समय की बात है, जब राघव 12वीं में थे। उनके पिता का स्वास्थ्य खराब हो गया और स्थिति ऐसी हुई कि उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। दूसरी ओर राघव के 12वीं की बोर्ड की परीक्षा पास में थी। यह समय राघव के मुश्किल भरा था, एक और पिता, दूसरी ओर कैरियर।

परंतु राघव ने अपने करियर की चिंता छोड़कर अपने पिता का इलाज कराने के लिए उनको एक अस्पताल में भर्ती कराया। उनके परिवार की दशा पहले से ही खराब थी, बीमारी के कारण और कमजोर हो गयी।

लगभग 3 माह तक लगातार इलाज चलने के बाद उनके पिता के स्वास्थ्य में सुधार आया। अपने पापा को ठीक देख, राघव के चेहरे पर एक मुस्कान खिल आई। उसके बाद वे फिर से अपनी पढ़ाई में जुट गये।

उसके तीन साल बाद फिर से उनके पिता की तबियत खराब हो गयी, उस समय वे पढ़ने के लिए एक अच्छे कॉलेज में गये थे। जहाँ उनका एडमिशन **इकोनोमिक वीकर** सीट पर हुआ था। कॉलेज में सेमेस्टर एक्जाम चल रहे थे, तभी उनके पास सूचना आई कि उनके पिता की हालत बहुत ख़राब है और वे हॉस्पिटल में हैं।

सूचना मिलते ही वे एक्जाम छोड़कर तुरंत हॉस्पिटल की ओर दौड़े। पिता की हालत देखकर वे अपनी आँखों के आंसूओं को ना रोक पाए। उनके पिता की हालत कुछ ऐसी थी, बस सांस चल रही थी बाकी शरीर एक बेजान वस्तु। वे डॉक्टर के पास गये तो डॉक्टर ने कहा कि कोशिश पूरी कर रहे हैं, बाकी भगवान भरोसे।

वे मन ही मन बहुत दुखी थे और ईश्वर से यही प्रार्थना कर रहे थे कि उनके पिता जल्दी से स्वस्थ हो जायें। उनकी बीमारी से घर की हालत इतनी कमजोर हो गयी थी कि साहूकारों से ब्याज पर पैसा लेना पड़ा।

अपने घर के ऐसे हालात देखकर राघव ने फैसला किया कि वे अब पढ़ाई नहीं करेंगे और कोई काम करके पैसे कमाएंगे। काम की तलाश में वे हरिद्वार गये और वहां एक प्राइवेट कम्पनी में **हेल्पर** की नौकरी करने लगे। उन्हें वहां से **5000 रुपये** वेतन मिलता था, परंतु **ओवरटाइम करके 8000 रुपये** तक कमा लेते थे। इस प्रकार कड़ी मेहनत करके वे अपने परिवार को सहारा देने लगे। उनके पैसों से परिवार का खर्च, दवाइयों का खर्च चलता था। उसके बाद उन्होनें " **एलुडेकर** " नाम की एक **एसीपी (एल्युमिनियम कंपोज़िट पैनल)** कंपनी को ज्वाइन किया और वहाँ क्वालिटी एक्जीक्युटिव के पद पर कार्य करने लगे, जहाँ से उनको एक अच्छा वेतन मिलने लगा।

राघव ने सोचा कि शायद अब वह अपने कैरियर में कुछ नहीं कर पाएगा और निराश मन लेकर काम करता रहा। वह अपने नाम को अपनी पहचान बनाना चाहता था। उसको ज़िंदगी में सिर्फ़ पैसा ही नहीं, बल्कि मान-सम्मान भी चाहिए था। उसने सोचा कि यदि वह सरकारी नौकरी करेगा, तो उसके सारे सपने पूरे हो जाएंगे।

बस फिर क्या था वह सरकारी नौकरी के फार्म डालने लगे। परंतु जॉब के साथ तैयारी बहुत मुश्किल होता है। इसलिए किसी भी वेकेंसी में सलेक्शन नहीं हुआ। उसके बाद उन्होनें सोचा कि मैं अब कुछ नहीं कर पाउंगा और निराश बैठ गये। फिर कुछ मोटिवेशनल वीडियो देखी और कॉपी पर कुछ शब्द लिखें। फिर उनको लय में परिवर्तित कर तुकांत शब्द बनाकर चार पंक्तियों का एक स्टेंजा लिखा और इन्हीं चार पंक्तियों से उनके लेखन की शुरूआत हुई।

"कुछ कर गुजरने का है जज्बा मुझमें,

कुछ कर दिखाने की चाहत है ;

जिस दौर से गुजरा हूँ मैं,

उस दौर की मुझको आहट है।।"

ये चार पंक्तियां उनके जीवन में एक नया मोड़ लायी और शुरू हुई उनकी एक नयी जीवन यात्रा। उसके बाद लेखन के बारे में खोज की, तो पाया कि लेखन से वे एक नयी पहचान बनाकर अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं।

यह सन् 2019 की बात है, जब उन्होनें लेखन के लिए **योरकोट एप्पलीकेशन** का प्रयोग किया और धार्मिक विचारों को, जीवन के भावों को कोट्स के माध्यम से व्यक्त करना शुरू कर दिया और धीरे-धीरे उनके विचार लोगों को पसंद आने लगे। इस प्रकार उनकी लेखन के प्रति रूचि और अधिक बढ़ गयी। उनकी लेखन कला से दूसरे लेखक भी प्रभावित होने लगे।

सन् 2020 में उनको एक **लेखिका नेहा राही ने अपनी पुस्तक "आजादी" में सह-लेखक** की भूमिका निभाने के लिए आमंत्रित किया। उन्होनें उस प्रस्ताव को स्वीकार किया और उस पुस्तक के साथ-साथ एक अन्य पुस्तक **"चंद-सिक्के"** में भी सह-लेखक की भूमिका निभाई।

इस प्रकार वह अन्य बहुत से संपादकों और प्रकाशकों के सम्पर्क में आए और सह-लेखक के रूप में कार्य करते रहे। इस प्रकार अभी तक वे **50 पुस्तकों से भी अधिक पुस्तकों में सह-लेखक** की भाँति कार्य करने लगे।

उसके पश्चात उन्होनें सोचा कि अपनी भी एक पुस्तक लिखेंगे। इससे पहले 2021 में उन्होनें पुस्तक **"सीजन्स ऑफ़ हर्ट"** का संपादन किया। यह पुस्तक **"फर्स्ट एक्रोस्टिक स्टाइल पाएट्री बुक"** के रूप में **5 नेशनल और इण्टरनेशनल बुक ऑफ़ रिकॉर्डस से सम्मानित** हुई।

यह राघव की पहली सफलता थी, जिसमें उनका नाम इण्टरनेशनल लेवल पर सम्मानित हुआ। इस पुस्तक के प्रकाशित होने तक उन्हें बहुत सी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा, जिसमें प्रमुख थी - **जॉब के साथ लेखन को समय देना और दूसरा पारिवारिक रिजेक्शन का सामना करना**। परंतु वे दोनों चुनौतियों से विचलित नहीं हुए और अपने कार्य में निरंतर गतिशील रहे।

उसके पश्चात उनकी **प्रथम एकल पुस्तक "जीवन-मंथन" (A Rise Of Inspiration)** प्रकाशित हुई। जिसने भी **4 नेशनल और इण्टरनेशनल बुक ऑफ़ रिकॉर्डस** में अपना नाम दर्ज किया।

अब राघव चौहान इण्टरनेशनल लेवल पर सम्मानित हो रहे थे। उनके साक्षात्कार न्यूज में प्रकाशित हो रहे थे। बहुत सी मैग्जीन कम्पनी उनके आर्टिकल और उपलब्धियों को अपनी मैग्जीन में जगह दे रही थी।

उनके परिवार को जब पता चला कि राघव चौहान एक लेखक बन गए हैं, तो उनको विश्वास नहीं हुआ। परंतु जब उनकी उपलब्धियों को देखा तब भी कोई रियेक्शन नहीं।

राघव ने इन सब चीजों को इग्नॉर किया और अपने लक्ष्य पर फोकस रखा। परंतु शायद उनके जीवन में दुख ही लिखे थे क्या। एक ऐसा दुख जिसकी पीड़ा सोचने मात्र से असहनीय हो जाती है। ऐसा ही एक **ब्लैक डे** उनकी ज़िंदगी में आया और वह था **11 अगस्त 2021**।

इस दिन उनके पिता ने संसार से अंतिम विदाई ली। इस घटना ने उनको और उनके परिवार को तोड़कर रख दिया। अब घर की समस्त जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ चुकी थी। वे अपने **पिता की मृत्यु** से बहुत दुखी हुए, मानो कि दुख का पहाड़ उन पर टूट गया हो।

अब वह अकेले हो चुके थे। एक जिद्दी लड़का, जो कभी हालातों से हारा नहीं, वो आज टूट चुका था। उसके हौंसले जो बुलन्दियों के आसमां छू रहे थे, वे पस्त होने लगे।

ऐसी स्थिति में देखकर उनकी दीदी ने उन्हें समझाया और उनको धीर बंधाते हुए संभाला। उन्हें संभालने में उनके मौसा जी, दीदी का अहम योगदान रहा।

अब वह फिर से अपने कार्य में जुट गये और अपनी जिम्मेदारीयों को निभाते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। **आपको बता दें कि राघव चौहान एक लेखक होने के साथ-साथ पॉडकास्ट आर्टिस्ट भी हैं। आजकल उनकी कुछ कविताएं पोपुलर ऑडियो प्लेटफ़ॉर्म जैसे - विंक म्यूज़िक, गाना, जिओ सावन, हंगामा म्यूज़िक आदि पर पोपुलर हो रही हैं।**

हाल ही में एक रिपोर्ट के अनुसार राघव चौहान की एक कविता ने एक महीने में **20000 + प्ले** होने का रिकॉर्ड बनाया है, जिस कारण **उनकी तस्वीर को हैदराबाद के विंक म्यूज़िक ऑफ़िस में लगाया जाएगा**।

वास्तव में राघव चौहान का संघर्ष आज अपने रंग दिखा रहा है। वे लेखन क्षेत्र में एक उभरती प्रतिभा हैं।

व्यक्तिगत जानकारी | Personal Information

क्रम संख्या	विषय	जानकारी
1	नाम	राघव चौहान (Raghav Chauhan)
2	वास्तविक नाम	रमाकांत सिँह
3	व्यवसाय	लेखक (Indian Writer & Author)
4	जन्मतिथि	06 जुलाई 1997
5	जन्मस्थान	टांडा अफजल, ठाकुरद्वारा, मुरादाबाद, उत्तर-प्रदेश
6	उपनाम	राघव
7	आयु	24 वर्ष
8	प्रारंभिक शिक्षा	रामलाल सिंह चौहान सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज, जसपुर
9	पिता का नाम	स्व. श्री सत्यपाल सिँह

10	पिता की मृत्यु	11 अगस्त 2021
11	माता का नाम	निशा देवी
12	बहिन का नाम	शुचिका चौहान
13	शारीरिक माप	ऊंचाई-5''8 इंच&वजन-60 किग्रा.
14	वैवाहिक स्थिति	अविवाहित
15	धर्म	हिन्दू
16	राष्ट्रीयता	भारतीय
17	मेंटॉर (मार्गदर्शक)	(हिमांशी काम्बोज & संगीता विनायक) दीदी
18	फेवरेट मूवी	एम एस धोनी - अनटॉल्ड स्टोरी, दंगल, मेरीकॉम
19	हॉबी (**Hobby**)	Internet Suffering, Writing & Reading Motivational Books
20	सीक्रेट ऑफ़ लाइफ	डॉरेमॉन (**Doremon**)
21	उपलब्धियां	**5TM's वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्डस होल्डर, एशिया और इण्डिया बुक ऑफ़ रिकॉर्डस होल्डर, 5TM's नेशनल अवॉर्ड्स से सम्मानित**
22	प्रमुख रचनाएं	**जीवन-मंथन (A rise of Inspirations), A Path To Heaven, अंधविश्वास, एक सफ़र (संघर्ष से सफलता तक), ढाई आखर प्रेम के, नारी-दुर्दशा**

उपलब्धियां | Achievements

- **सन् 2020 में आध्यात्मिक ज्ञान के गूढ़ रहस्यों से सुसज्जित जीवन आधारित प्रथम ई-बुक "जीवन-सुधा" प्रकाशित।**

- **16 जुलाई 2020 को सह-लेखक के रूप में उल्लेखित।**

- **31 जनवरी 2021 को ओएमजी नेशनल बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स (OMG National Book Of Records) से सम्मानित।**

- **०5 फ़रवरी 2021 को ब्रेवो इण्टरनेशनल बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स (Bravo International Book Of World Records) से सम्मानित।**

- **०8 फ़रवरी 2021 को वाजरा वर्ल्ड रिकॉर्ड्स (Vajra World Records) से सम्मानित।**

- **12 फ़रवरी 2021 को फॉरएवर स्टार बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्डस (Forever Star Book Of World Records) से सम्मानित।**

- **14 फ़रवरी 2021 को एक्सक्लुसिव वर्ल्ड रिकॉर्डस (Exclusive World Records) से सम्मानित।**

- **26 फ़रवरी 2021 को इण्टरनेशनल बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्डस (International Book Of World Records) से सम्मानित।**

- **०8 मार्च 2021 को ऑल इण्डिया वेस्ट राइटर्स अवॉर्ड्स 2021(All India Best Writers Awards) से सम्मानित।**

- **20 मार्च 2021 को अचीवमेंट ऑफ़ द् ईयर (Achievement Of The Year) अवॉर्ड्स 2021 से सम्मानित।**

- **27 मार्च 2021 को अप्पलॉस (Applause) अवॉर्ड्स 2021 से सम्मानित।**

- **29 मार्च 2021 को क्रीडेंस बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्डस (Credence Book Of World Records) से सम्मानित।**

- **31 मार्च 2021 को साहित्यकोश सम्मान 2021 से सम्मानित।**

- **12 अप्रैल 2021 को इण्डिया बुक ऑफ़ रिकॉर्डस (India Book Of Records) से सम्मानित।**

- **24 अप्रैल 2021 को एशिया बुक ऑफ़ रिकॉर्डस (Asia Book Of Records) से सम्मानित।**

- **10 जून 2021 इंसपीरिशन ऑफ़ द् ईयर के लिए ड्रीम अवॉर्ड्स 2021 से सम्मानित।**

- **15 जून 2021 को स्पैक्ट्रम अवॉर्ड्स 2021 से सम्मानित।**

- ०4 जुलाई 2021 को प्रकाशित ऑथर (Published Author) की उपाधि।

- 06 जुलाई 2021 को वर्ल्ड रिकॉर्डस यूनिवर्सिटी, लंदन द्वारा मानद् डॉक्टरेट (Honarary Doctorate) के लिए नामित।

- 12 जुलाई 2021 को इण्डिया 100 प्राइम ऑथर्स अवॉर्ड्स 2021 से सम्मानित।

- 20 जुलाई 2021 को अवॉर्ड्स Arc द्वारा नॉन-स्टॉप अचीवर की उपाधि।

- 01 अगस्त 2021 को इण्डियन नोबेल अवॉर्ड्स 2021 से सम्मानित।

- **18 अगस्त 2021 को इन्फ्लुएंशियल इण्डियन अवार्डस (Influential Indians Awards) 2021 से सम्मानित।**

- **18 अगस्त 2021 को पॉडकास्ट आर्टिस्ट (Podcast Artist) के रूप में प्रमाणित।**

- **24 अगस्त 2021 को नेशनल आइकन अवॉर्ड्स (National Icon Awards) 2021 से सम्मानित।**

- **11 सितम्बर 2021 को इण्डियन ग्लोरी अवॉर्ड्स 2021 से सम्मानित।**

➢ **21 अक्टूबर 2021 को अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका "क्लासिको ओपाइन " (एम.टी. केन्या टाइम्स समाचार पत्र द्वारा प्रकाशित) के कवर स्टार।**

➢ **01 दिसम्बर 2021 को मैजिक बुक ऑफ़ रिकॉर्डस द्वारा लेखन क्षेत्र में मानद् डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित।**

- **20 दिसम्बर 2021 को फॉरएवर स्टार इंडिया अवॉर्ड सीजन -2 द्वारा "द् रियल सुपर हीरो अवॉर्ड 2021" से सम्मानित।**

- **03 जनवरी 2022 को डिजिटल नेशनल मैंग्जीन "एस्पाइरिंग अचीवर्स " के कवर स्टार।**

<u>रोचक तथ्य</u> | Amazing fact

- राघव चौहान का वास्तविक नाम रमाकांत सिँह है, जो तकनीकी क्षेत्र में एक जूनियर अभियंता के रूप में कार्य कर चुके हैं।

- राघव चौहान भले ही उत्तर-प्रदेश से हैं। परंतु वे उत्तराखंड को भी बराबर श्रेय देते हैं। उनके अनुसार उत्तर-प्रदेश उनकी जन्मभूमि है, तो उत्तराखंड उनकी कर्म भूमि है।

- राघव चौहान जितना अच्छा लिखते हैं, उतनी ही लाउड उनकी आवाज है। वे एक मार्केटिंग कम्पनी के लिए मोटिवेशन स्पीच दे चुके हैं।

- उनकी लाउड आवाज़ उनकी सामर्थ्य को प्रदर्शित करती है। कहते हैं कि बचपन में स्कूल के कार्यक्रमों में उन्हें लक्ष्मण का रोल मिलता था।

- राघव जितना सीरियस रहते हैं, उतना ही फ्रैंक भी हैं। उनको बात-चीत करते समय जॉकिंग बहुत पसंद है।

- जिद्दी होना, उनकी चारित्रिक विशेषता है। एक सेशन में राघव ने कहा है कि - जब मैं छोटा था तो माँ, पापा से शिकायत करती थी कि उनका बेटा जिद्दी हो रहा है, उसको स्कूल में यही सिखा रहे हो। आज वही जिद्द इतनी बड़ी हो गयी है कि एक नयी पहचान बना पाया हूँ।"

- राघव चौहान, अपनी अधिकांश परेशानियों का हल स्वयं ढूंढते हैं। जिसके लिए वे गीता/पौराणिक विषयों पर मंथन करते हैं।

- राघव चौहान अपनी सफलता का श्रेय अपने मार्गदर्शकों को देते हैं। उनके अनुसार एक वास्तविक मार्गदर्शक वह है, जो आपको सही मार्ग दिखाएं और सदैव आपको उत्साहित करे।

- राघव चौहान के जीवन का एक रहस्य है, जिसको वे डोरेमॉन लिखकर प्रदर्शित करते हैं। एक साक्षात्कार के दौरान राघव ने बताया है कि डोरेमॉन कोई भी हो सकता है। कोई ऐसा, जिसको आप सदैव अपने साथ महसूस करते हैं और उस अनुभव से आप सदैव हैप्पी, पॉजिटिव रहते हैं।

- राघव चौहान परोपकारी प्रकृति के भी हैं। उनको जरूरतमंदो की सहायता करने में बहुत खुशी मिलती है। उनके अनुसार निःस्वार्थ भाव से की गयी सहायता मानवता को सम्बोधित करती है।

- राघव चौहान प्रकृति प्रेमी भी हैं, उनके प्राकृतिक सौन्दर्य युक्त स्थानों पर घूमना पसंद है।

- राघव चौहान सादा जीवन उच्च विचार को ही जीवन का आधार मानते हैं। उनका कहना है कि मानव की पहचान उसकी बाह्य बनावट से नहीं बल्कि उसकी प्रतिष्ठा से होती है।

- आपको बताना चाहेंगे कि राघव चौहान की कविताओं को विंक म्यूजियम, हैदराबाद में भी स्थान मिला है। जल्द ही वहाँ उनकी कविताओं के साथ-साथ उनका पोस्टर भी म्यूजियम की दीवार पर देखने को मिलेगा।

निष्कर्ष | Conclusion

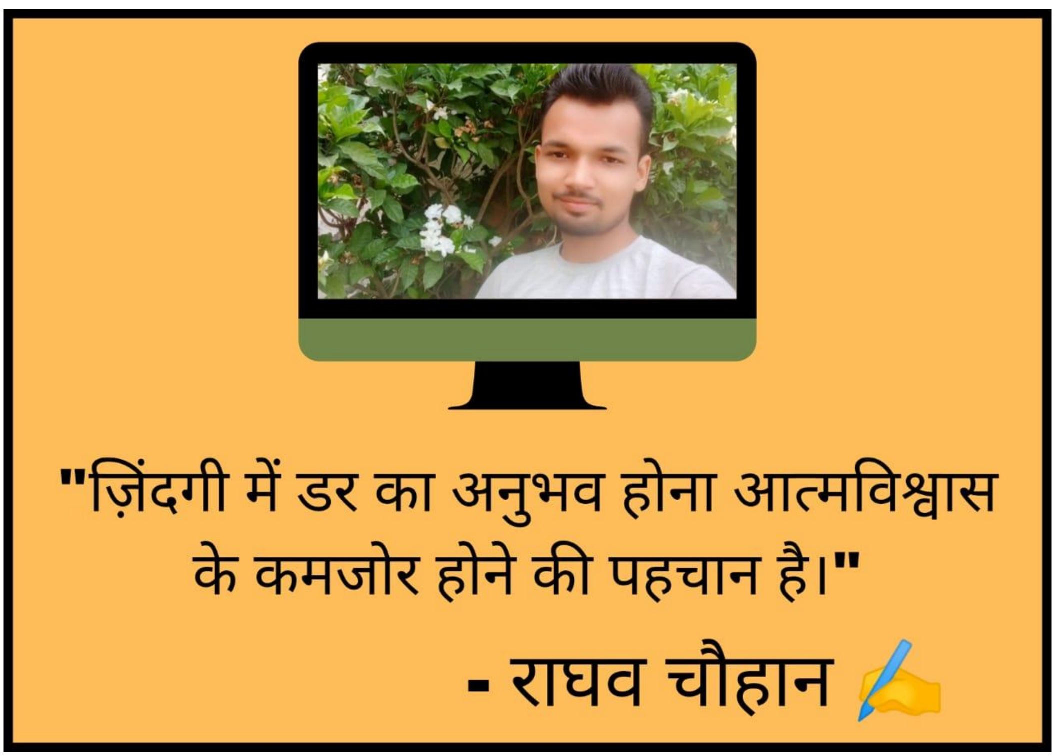

राघव चौहान की जीवनी यही संदेश देती है कि ज़िंदगी में सफलता से पहले संघर्ष से लड़ना पड़ता है और संघर्षित जीवन ही जीवन मूल्यों को अनुभव कराता है। राघव चौहान अपनी सफलता के लिए अपने माता-पिता, अपने गुरूजनों, अपनी दीदी (**हिमांशी काम्बोज और संगीता विनायक**) को श्रेय देते हैं।